भूषण

जन्म	:	**1613 ।**
निधन	:	**1715 ।**
जन्म-स्थान	:	**तिकवाँपुर, कानपुर, उत्तरप्रदेश ।**
पिता	:	**रत्नाकर त्रिपाठी ।**
उपनाम	:	**भूषण, चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रसाह ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी । आगे उपनाम भूषण इतना प्रसिद्ध हुआ कि मूलनाम विस्मृत हो गया ।**
प्रमुख आश्रयदाता	:	**छत्रपति शिवाजी, शिवाजी के पुत्र शाहूजी एवं पन्ना के बुंदेला राजा छत्रसाल ।**
विशेष	:	**रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम भूषण के भाई के रूप में जाने जाते हैं ।**
कृतियाँ	:	**शिवराज भूषण (384 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति करनेवाले मुक्तकों का संग्रह) । शिवा बावनी (52 मुक्तकों में छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान) । छत्रसाल दशक (10 छंदों में महाराज छत्रसाल की वीरता का यशोगान) । ये तीन कृतियाँ अप्राप्य हैं : भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास । कुछ स्फुट पद्य भी प्राप्त होते हैं ।**

भूषण हिंदी कविता में रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि हैं जिनका हिंदी जनता में बहुत सम्मान है । वे जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं । वीर रस के इस महान कवि ने फड़कती हुई मुक्तक शैली में छत्रपति शिवाजी और बुंदेला वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई हैं । ओज, पराक्रम और उत्साह से भरे हुए कवि भूषण के प्रवाहमय छंद हिंदी जनता के बीच शताब्दियों से चाव के साथ गाए जाते रहे हैं । उनकी लोकप्रियता का यह प्रमाण है कि जनमानस में भूषण वीर रस के पर्याय और प्रतिमूर्ति की तरह प्रतिष्ठित हैं । मध्यकाल में भाव-भाषा और अभिव्यक्ति के विविध क्षेत्रों और रूपों पर धर्म का रंग गहरा था । जातीय चेतना और भावना से धर्मभावना को विलग कर सकना सहज नहीं था । स्वभावत: भूषण की जातीय भावना भी इसका अपवाद नहीं थी । स्वयं सत्ताधारी शासक वर्ग अपने राजनीतिक चातुर्य, सूझ-बूझ एवं उदारता के बावजूद धार्मिक-जातीय भेद-बुद्धि से अनुप्राणित और चालित था । स्वभावत: मध्यकालीन काव्य को ऐतिहासिक तथ्यों के प्रकाश में ही देखना-परखना होगा और आज की धर्म-संप्रदाय-निरपेक्ष जनतांत्रिक दृष्टि से उसकी मूल्यवत्ता की पड़ताल और पहचान करनी होगी । महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी या छत्रसाल जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति अपने कार्यों से अपने युगों में ही लोकनायक बन चुके थे । जननायक की उनकी ऐतिहासिक छवि आज भी जनमानस में अक्षुण्ण रूप से प्रतिष्ठित है । स्वभावत: इनकी विरुदावलियाँ, प्रशस्तियाँ तथा उनके निर्माता कवि-लेखक जनता के बीच उसी तरह प्रतिष्ठित

हैं । आज भी लोग उसी तरह उनकी कृतियों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं । भूषण ऐसे ही एक लोकप्रेरक महान कवि हैं ।

रीतिकाल में रस-अलंकार-नायिकाभेद आदि का निरूपण करते हुए उदाहरण के रूप में कविता करनेवाले कवियों की लंबी परंपरा थी । ऐसे कवियों को 'आचार्य कवि' या 'रीतिबद्ध कवि' कहते हैं । भूषण एक रीतिबद्ध आचार्य कवि ही थे, किंतु अलंकार-निरूपण करते हुए उनका आचार्य रूप बहुत सफलता नहीं प्राप्त कर सका । उनके आचार्य रूप पर उनका कवि रूप भारी पड़ गया है और यह तथ्य उनके काव्य प्रेमियों के लिए सुखद है । रीतिकाल में शृंगार रस की प्रधानता थी, प्राय: सभी कवि शृंगार की कविता लिखते दिखलाई पड़ते हैं । इस प्रधान प्रवृत्ति और भाव-प्रवाह से अलग हटकर भूषण ने वीर रस को प्रमुखता दी और उसी के अनुरूप अपना स्वतंत्र पथ निर्मित किया । इससे भूषण की स्वाधीन चेतना, आत्मविश्वास और विशिष्ट स्वभाव का पता चलता है । उन्होंने कविता की भाषा तो ब्रजभाषा ही रखी किंतु उसमें शब्द, मुहावरे और रचना संबंधी प्रयोगों में विषय और भावों के अनुरूप स्वतंत्रता बरती ।

यहाँ भूषण के दोनों प्रिय नायकों—छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल—से संबंधित दो कवित्त दिए जा रहे हैं जिनमें उनके शौर्य का ओजस्वी बखान है ।

◆ ◆ ◆

"भूषण रीतिवादी वीर काव्य परंपरा से अलग हटकर प्रभावशाली कविता रच सकते हैं । इसका कारण यह है कि वह अपने समय के लोकजीवन से कटे हुए नहीं थे । उनके सामने अनेक प्रकार के राजा और सामंत थे और इनमें वह शिवाजी की विशेषता पहचान सके थे । इसके सिवा उनके सामने रैयत भी थी :

"कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की ।''

रैयत के मन की कसक का उन्हें पता था । औरंगजेब पर उनकी व्यंग्योक्तियाँ बहुत अच्छी राजनीतिक लोककविता की मिसालें हैं ।"

– रामविलास शर्मा

कवित्त

(1)

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है ।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है ।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है ।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है ।

(2)

निकसत म्यान ते मयूखैं, प्रलै-भानु कैसी,
फारै तम-तोम से गयंदन के जाल को ।
लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माल को ।
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल को ।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ।

अभ्यास

कवित्त के साथ

1. शिवा जी की तुलना भूषण ने किन-किन से की है ?
2. शिवा जी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की है ?
3. छत्रसाल की तलवार कैसी है ? वर्णन कीजिए ।
4. नीचे लिखे अवतरणों का अर्थ स्पष्ट करें –
   (क) लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी,
   रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन की माल को ।
   (ख) प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
   कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ।
5. भूषण रीतिकाल की किस धारा के कवि हैं, वे अन्य रीतिकालीन कवियों से कैसे विशिष्ट हैं ?
6. आपके अनुसार दोनों छंदों में अधिक प्रभावी कौन है और क्यों ?

कवित्त के आस-पास

1. प्रथम छंद में आए पौराणिक प्रसंगों के विषय में जानकारी प्राप्त करें । इसके लिए अपने मित्रों, शिक्षकों एवं आस-पास के बड़े-बुजुर्गों से मदद लें ।
2. भूषण शिवाजी एवं छत्रसाल दोनों के दरबार में रह चुके थे । इन दोनों के राज्य, सैन्य-संगठन, प्रशासन आदि के विषय में जानकारी एकत्र करें ।
3. भूषण एक दरबारी कवि थे, आप ऐसे ही पाँच अन्य कवियों की सूची बनाएँ, साथ ही उनके आश्रयदाताओं के नाम भी लिखें ।
4. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कविता में क्या अंतर है ? संक्षेप में बताएँ ।
5. भूषण वीर रस के अप्रतिम कवि हैं, हिंदी के वीर रस के अन्य कवियों के नाम मालूम करें और ऐसी कुछ रचनाओं का भी संकलन करें ।

भाषा की बात

1. प्रथम छंद में कौन सा रस है ? उसका स्थाई भाव क्या है ?
2. प्रथम छंद का काव्य गुण क्या है ?
3. द्वितीय छंद में किस रस की अभिव्यंजना हुई है ? उस रस का स्थाई भाव क्या है ?
4. प्रथम छंद में किन अलंकारों का प्रयोग हुआ है ?
5. 'लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनी सी'–इसमें कौन सा अलंकार है ?
6. दूसरे छंद से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
7. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   भानु, रुद्र, चीता, इंद्र, तम, तेज, मृग, काल, कंठ, भट

8. 'महाबाहु' में 'महा' उपसर्ग है, इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।

9. 'छितिपाल' में 'पाल' प्रत्यय है, इस प्रत्यय से युक्त छह अन्य शब्द बनाएँ ।

शब्द निधि

जिमि	:	जैसे
जँभ	:	यम
बाड़व	:	बड़वाग्नि, समुद्र की आग
अंभ	:	जल
सदंभ	:	दंभ से भरा
पौन	:	हवा, पवन
बारिबाह	:	बादल
संभु	:	शंभु (शिव)
रतिनाह	:	कामदेव (रति के पति)
सहस्रबाहु	:	एक राजा जिसकी भुजाओं को परशुराम ने काट डाला था
राम द्विजराज	:	परशुराम (परशुराम को राम भी कहा गया है)
दावा	:	दावाग्नि, जंगल की आग
द्रुम दंड	:	वृक्षों की डालें
बितुंड	:	हाथी
मृगराज	:	पशुओं (मृगों) का राजा सिंह
मयूखैं	:	किरणें
प्रलै-भानु	:	प्रलयंकारी सूर्य
तम-तोम	:	अंधकार का समूह
गयंदन	:	गयंद (हाथी) का बहुवचन रूप
बैरिन	:	बैरी (शत्रु) का बहुवचन रूप
रुद्रहि	:	रुद्र को, शिव का एक क्रोधयुक्त रूप
मुंडन की माल	:	मुंडों की माला
छितिपाल	:	भूपाल (पृथ्वी का पालन करनेवाला), राजा
करवाल	:	तलवार
प्रतिभट	:	शत्रु योद्धा
कटक	:	समूह, सेना
कटीले	:	काटने वाला
केते	:	कितने
कालिका	:	देवी का कालिका रूप जिससे उन्होंने रक्तबीज का संहार किया था
किलकि	:	किलककर, प्रसन्नतापूर्वक, उल्लसित होकर
कलेऊ	:	कलेवा, भोजन
लाल	:	प्यारा